B. A. Third Year

First paper

Geographical Thought

BY

Dr. Shivanand Yadav

Assistant professor and Head

Department of geography

Harishchandra P. G. College Varanasi

(पुनर्जागरण काल)

"जिस प्रकार इसाइयों के अंधेरा युग को मुस्लिम सभ्यता के उदय ने ढक लिया, उसी प्रकार मुस्लिम सभ्यता के पतन को यूरोप के पुनर्जागरण युग के प्रारम्भ द्वारा ढक लिया गया।" लगभग 1250 ई. से लेकर 1700 ई. तक का काल, भूगोल का पुनरुत्थान काल कहलाता है। अतः इस युग को तथ्य अन्वेषण युग (Fact finding Age) भी कहा जाता है। इस काल में नये-नये मार्गों द्वीपों, महाद्वीपों एवं प्रदेशों की खोज की गयी। इसलिए पुनर्जागरण काल के इस युग को अन्वेषण तथा खोजों का युग माना जाता है। इसके निम्नवत कारण थे-

(i) यूरोपीय देशों पर से मुस्लिम साम्राज्य का पतन होना। इस दिशा में सर्वप्रथम पुर्तगाल एवं स्पेन मुस्लिम साम्राज्य से स्वतंत्र हुए।
(ii) पुर्तगाल व स्पेन में नाव्य परिवहन का विकास होना एवं जलयान का विकास
(iii) यूरोपीय लोगों में अज्ञात विश्व के बारे में जानने की ललक जाग्रत होना।
(iv) यूरोपीय लोगों का ईसाई धर्म का प्रचार करना।
(v) स्थल मार्गों की अपेक्षा समुद्री मार्गों से यात्रा किये जाने पर जोर देना।
(vi) ऐसे समुद्री मार्गों की खोज करना, जिनमें अरब देशों का कोई हस्तक्षेप न हो।
(vii) यूरोपीय लोगों का एशिया के देशों से व्यापारिक गतिविधियाँ बढ़ाना।

उपर्युक्त कारणों से 13वीं शताब्दी के बाद यूरोपियन लोगों द्वारा विश्व के कई भागों को पहली बार विश्व मानचित्र पर लाया गया (समुद्री यात्राओं ~~के~~ कारण) यही कारण है कि पुनर्जागरण युग यात्रा युग (Age of Travels) कहलाता है। साथ ही साथ इस युग में प्राचीन भौगोलिक ज्ञान को यूनानी व रोमन भौगोलिक ग्रंथों से पुनः प्राप्त कर मान्यता ~~प्रदान~~ प्रदान की गयी एवं उसी ज्ञान के आधार पर ही लम्बी-लम्बी समुद्री यात्राएं कर विश्व के विभिन्न भागों के बारे में सही-सही जानकारी प्राप्त करने का सफल प्रयास किया गया। इसी कारण इस अवधि को पुनर्जागरण काल (Renaissance Era) कहा जाता है।

यात्रा करने वाले प्रमुख विद्वान और उनकी अन्वेषणाएं ⇒

(Important Scholars as Travellers and their Explorations)

(i) कारपिनी (Karpini) (1185–1252) - यह रोमन साम्राज्य का धार्मिक दूत था, इसने 1245 में मध्य एशिया एवं कराकोरम क्षेत्र की विस्तृत यात्रा की।

(ii) विलियम रुब्रेक (William Rubraque) (1220-1293) - यह एक फ्रांसीसी धर्म प्रचारक था। 1256 में इन्होंने सोवियत रूस, मध्य एशिया और मंगोलिया की यात्रा की। डॉन व वोल्गा नदियों का उद्गम क्षेत्र के बारे में बताया। कैस्पियन सागर को तीन ओर से पर्वतों से घिरा बताया। बालकश झील की सही स्थिति स्पष्ट की।

(iii) मार्कोपोलो Marcopolo [1254 – 1324] 13वी शताब्दी मे मार्कोपोलो ने वेनिस से चलकर सोवियत रूस, मध्य एशिया, मंगोलिया, पूर्वी एशिया एवं पश्चिमी एशिया की लम्बी यात्रा की। उसने इन देशों से संबंधित भौगोलिक एवं सामाजिक तथ्यों का वर्णन अपने यात्राग्रन्थ ट्रैवेल्स ऑफ मार्कोपोलो (Travels of Marcopolo) में किया है। वह अपने पिता निकोलस पोलो व चाचा मैफियो पोलो के साथ इटली के वेनिस शहर से, तुर्की, पश्चिमी एशिया होते हुए चीन गया। वह चीन मे 17 वर्ष रहा। उसकी यात्रा का उद्देश्य मुख्यत: व्यापार था। चीन को वह लौटते हुए इंडोनेशिया, मलेशिया, श्रीलंका, भारत व ईरान गया। चीन को उसने रेशम बनाने वाला देश कहा। इटली को एक मार्ग से रेशम का व्यापार होने लगा था, इसलिए इस मार्ग का नाम उसने रेशम मार्ग रखा।

(iv) वास्कोडिगामा (Vasco-da-gama) (1460–1524) वास्कोडीगामा पुर्तगाली यात्री था 1497 में वह 170 नाविकों की सहायता से 35° दक्षिणी अक्षांश केपटाउन पहुँचा इसके बाद वह पूर्वी अफ्रीका तट के सहारे मोजाम्बिक होते हुए कीनिया तक पहुँच गया। यहाँ पर एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से उसका जहाज भारत के दक्षिणी पश्चिमी तट पर 20 मई 1498 को कालीकट बन्दरगाह पहुँच गया। 29 अगस्त 1498 को गोवा से प्रस्थान कर उसी मार्ग द्वारा 10 जुलाई 1499 को पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन पहुँचा। 1510 ई० में पुर्तगाली लोगों ने गोवा को अपने अधिकार में ले लिया तथा यहाँ व्यापारिक केन्द्र की स्थापना की। 1542 में पुर्तगाली जापान तक पहुँच गये। 1557 में इन्होंने चीन से मकाओ द्वीप को पट्टे पर लिया। 1590 में इन्होंने ताइवान (Taiwan) पर अधिकार कर लिया और इसका पुर्तगाली नाम फारमोसा रखा।

(v) क्रिस्टोफर कोलम्बस – (Christofer Columbus 1451 – 1506) इन्होंने 1492 ई० मे नई दुनिया (अमेरिका) की खोज की। पुर्तगाली नाविकों के अनुभव के साथ वह 3 अगस्त 1492 को भारत की खोज हेतु रवाना हुआ। टालमी की गणना संबंधी अशुद्धियों के कारण उसने यह सोचा कि यूरोप से पश्चिम की ओर जाने से एक छोटे मार्ग द्वारा भारत पहुँचा जा सकता है। परन्तु वह भारत की जगह 1 अक्टूबर 1492 को, बहामा द्वीपों (Bahama Islands) में जा पहुँचा। उसने इन द्वीपों का नाम पश्चिमी द्वीप समूह (West Indies) रखा। वहाँ के लोगों को रेड इण्डियन (Red Indian) का नाम दिया। 1493 में जमैका व क्यूबा, 1496 में ट्रिनीडाड व टोबैको द्वीप समूह की खोज की। 1502 में उसने पनामा, होण्डुरास, कोस्टारिका, व निकारागुआ की खोज की। मध्य अमेरिका के इन देशों को वह एशिया समझ बैठा था। परन्तु उसकी इच्छा 'भारत की खोज' पूरी नहीं हुई और 1504 में वह वापस पुर्तगाल आ गया। इस प्रकार वास्तव में कोलम्बस नई दुनिया की खोज करने वाला सफल यात्री था।

(vi) जान केबट John Cabot - इनका जन्म जेनेवा में हुआ था, आपने ग्रीनलैण्ड व लैब्राडोर की खोज की।

(vii) अमेरिगो वस्पुकी (Amerigo Vespucci) - 1499 में अतलांतिक महासागर को पार कर दक्षिणी अमेरिका पहुँच गया। उसके नाम पर ही नई दुनिया का नाम अमेरिका रखा गया।

(viii) फर्डिनेण्ड मैगेलन - Ferdinand Magellan (1480-1521) - यह भी पुर्तगाली यात्री था। मैगेलन 1520 ई० में पश्चिम की ओर से नौकाचालन कर एशिया पहुँचने वाला प्रथम यात्री था। उसने पहली बार समस्त संसार का चक्कर लगाया। मैगेलन का फिलीपाइन्स द्वीप समूह के लोगों से संघर्ष हुआ और उसमें वह मारा गया। स्पेन के राजा फिलीप के नाम पर इन द्वीपों का नाम फिलीपाइन द्वीप समूह रखा गया।

(ix) कैप्टन कुक (James Cook - 1728-1779) - 1768 से 1778 के मध्य आस्ट्रेलिया सहित अनेक द्वीपों की खोज की।

(x) हडसन (Hudson) - इसने 1608 ई० में कनाडा के उत्तरी भाग की खोज की थी। उसी के नाम पर यहाँ स्थित खाड़ी का नाम हडसन खाड़ी रखा गया।

(xi) तस्मान (Tasman) यह डच यात्री था, इसने आस्ट्रेलिया के दक्षिण में स्थित तस्मानिया द्वीप की खोज की थी।

(xii) कापरनिकस - Capernicus (1465-1543) - पोलैण्ड के निकोलस कापरनिकस ने ब्रह्माण्ड के सूर्य केन्द्रीय विचार (Heliocentric concept) का प्रतिपादन किया अर्थात उसने पहली बार यह बताया कि सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं।

(xiii) केपलर जोन्स (Capler Jones) (1575-1630) - 1614 ई० में केपलर ने यह सिद्ध किया कि ग्रहों का परिक्रमण पथ गोलाकार नहीं बल्कि अण्डाकार (Elliptical) होता है। इन्होंने 1618 में 'गति का सिद्धान्त' नामक पुस्तक लिखी

इस प्रकार डच, स्पेन व पुर्तगाली लोगों ने विश्व के अज्ञात भागों की खोज समुद्री मार्गों से की तथा पूरी दुनिया का चक्कर लगाकर इस बात को सिद्ध कर दिया कि दुनिया गोल है। इन्हीं खोज यात्राओं ने पुर्तगाल, इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन एवं हालैण्ड को अपने उपनिवेश स्थापित करने में मदद की। उपर्युक्त महान यात्रियों एवं खोजकर्त्ताओं की खोजों से भूगोल हेतु बहुमूल्य सूचनाएं तथा सामग्री प्राप्त हुई जिसके आधार पर भूगोल का वैज्ञानिक स्तर पर विकास करना सम्भव हो पाया। पुराने भूगोल को नया रूप देने का प्रयास किया गया एवं 17 वीं शताब्दी के आरम्भ में प्राक् आधुनिक काल शुरू हुआ।